# समकालीन हिन्दी साहित्य

## विविध विमर्श

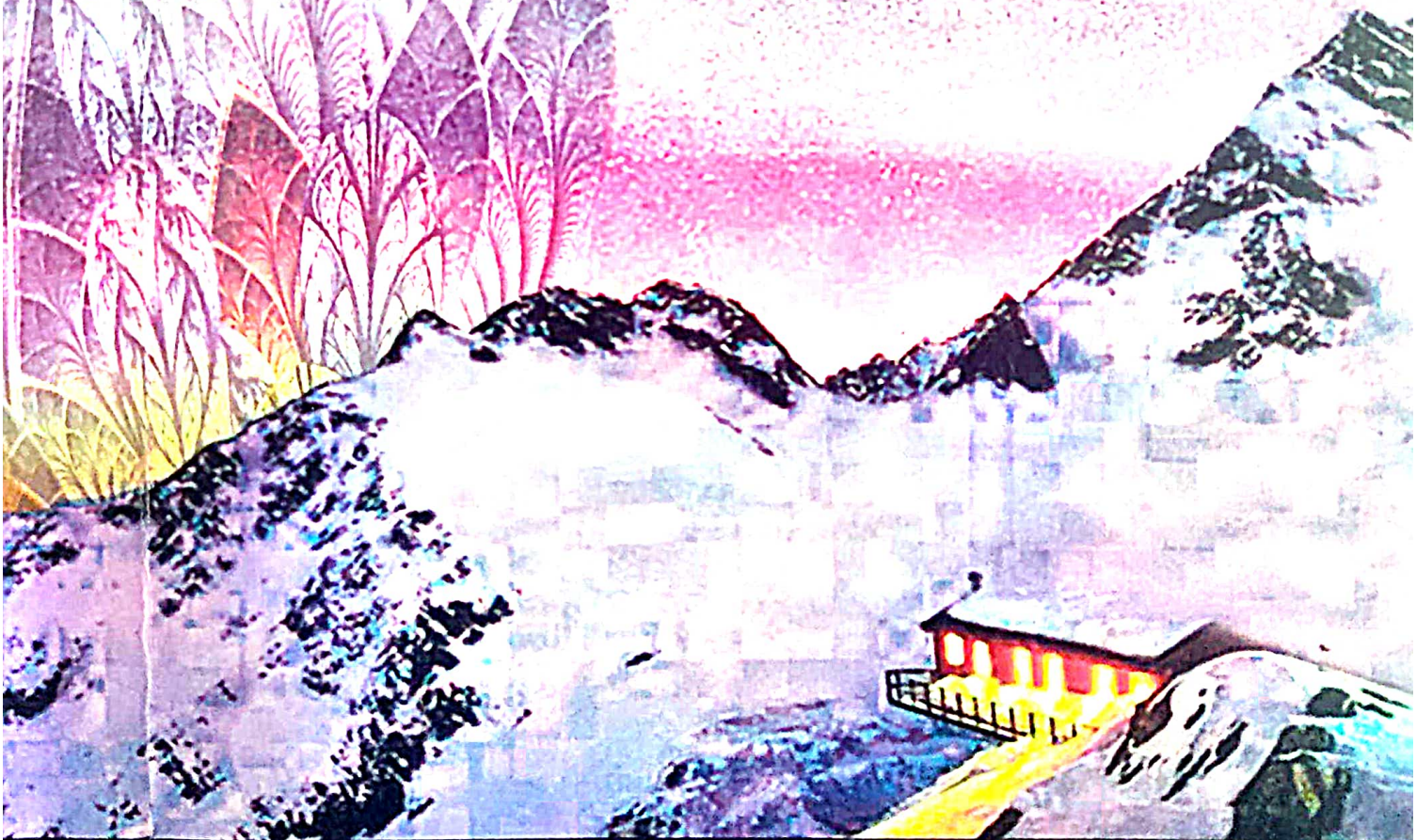

संपादक : डॉ. महानंदा बी. पाटील
सह संपादक : डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

# समकालीन हिन्दी साहित्य
# विविध विमर्श

संपादक

डॉ. महानंदा पाटील

सह संपादक

डॉ. मीनाक्षी पाटील

आर. के. पब्लिकेशन

मुम्बई

ISBN : 978-93-91458-66-9

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 300/-

शीर्षक

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

संपादक

**डॉ. महानंदा पाटील**

सह संपादक

**डॉ. मीनाक्षी पाटील**

प्रकाशक

**आर.के. पब्लिकेशन**

1/12, पारस दूबे सोसायटी,
ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड,
दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068

Phone : 9022521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com
Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र
virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

**Samkaaleen Hindi Sahitya : Vividh Vimarsh** Edited By
Dr. Mahananda Patil & Dr. Meenaxi Patil

# अनुक्रमणिका


1. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी का विकास
प्रो. बी.के. प्रजापति 11

2. बीसवीं सदी के विविध विधाओं में संस्मरण विधा का स्थान
डॉ. एम. बी. जमादार 20

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
प्रो. रूपा भीमराव पाटील 26

4. उपन्यास विधाओं के संदर्भ में स्त्री विमर्श
डॉ. महानंदा पाटील 29

5. स्त्री- विमर्श
डॉ. सुमी चोपड़े 35

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में भाषाओं का महत्व
डॉ. अशोक वी. सूर्यवंशी 39

7. हिन्दी के कुछ चुने हुए उपन्यासों में दलित विमर्श
डॉ. अञ्जलि. एन 42

8. कुवेंपु की कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना
डॉ.राजशेखर उमेश जाधव 50

9. स्त्री चित्रण का दस्तावेज : निर्मला
डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 56

# स्त्री चित्रण का दस्तावेज : निर्मला

- डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

स्त्री, नारी जैसे शब्द सुनते ही मन-मस्तिष्क में एक ऊर्जा-सी उत्पन्न होने लगती है। वैसे में वह नारी भारतीय हो, तो उसके प्रति आस्था और श्रद्धा और भी दुगनी हो जाती है। भारतीय नारी के गुणों की चर्चा करें तो पाते हैं कि यहाँ की नारी संवेदनाओं और भावनाओं के प्रति अत्यंत सुग्राही है। ऐसी स्थिति में प्रेमचंद द्वारा रचित 'निर्मला' उपन्यास की नायिका 'निर्मला' में भी यह गुण स्वाभाविक ही थे। 'निर्मला' प्रेमचंद द्वारा रचित लघु उपन्यास होते हुए भी सार्थकता व सजीवता से भरा है। इस उपन्यास में भले ही दहेज जैसी कुरूतियों से होनेवाली समस्याएँ तथा अनमेल विवाह का चित्रण प्रमुख विषय रहा है, किंतु इसका मुख्य उद्देश्य ऐसी कुरीतियों से स्त्री के जीवन पर होनेवाले दुष्परिणामों को दर्शाना है। निर्मला उपन्यास के शीर्षक में ही स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि 'नारी-जीवन की एक करूण कथा-निर्मला।' यहाँ निर्मला केवल निमित्त मात्र है। लेखक ने निर्मला के माध्यम से भारतीय नारी का चित्रण किया है।

प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त प्रत्येक समस्याओं को जैसे- किसानों की समस्या, बाल विवाह, ज़मीनदारी प्रथा, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा जैसे कई विषयों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। 'निर्मला' का प्रकाशन सन् 1927 ई. में हुआ। यह वह समय था जब ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज जैसी संस्थाओं के द्वारा देश में प्रचलित कुप्रथाएँ, कुरीतियाँ, अंधविश्वास, सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि का विरोध किया जा रहा था। साहित्यकार इन समाज सुधारकों के विचारों से प्रभावित होकर साहित्य के माध्यम से समाज को ऐसे कुविचार तथा कुप्रथाओं से मुक्त करने का अथक प्रयास कर रहे थे। इनमें से एक

प्रेमचंद भी रहे हैं। इन्होंने 'निर्मला' उपन्यास के द्वारा समाज में व्याप्त दहेज प्रथा और इस प्रथा से उद्भव होनेवाली समस्याओं का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया है। प्रेमचंद अवगत कराना चाहते हैं कि 'अनमेल विवाह' का मूल कारण 'दहेज प्रथा' है। समाज में आर्थिक विपन्नता के कारण अनमेल विवाह अधिक हुआ करते थे और 'निर्मला' उसी का जीता जागता उदाहरण था।

'निर्मला' के माध्यम से भारतीय नारी की विवशता, वेदना, संवेदनशीलता, मातृस्नेह आदि का परिचय कराया गया है। यहाँ निर्मला उन सभी भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जो निर्मला की परिस्थितियों से गुजरी है। समाज में ऐसी कई निर्मलाएँ थी, जो एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को पति मानती हैं, जो लगभग उन के पिता के आयु का होता है। निर्मला उपन्यास में निर्मला का विवाह तोताराम से होता है। उसकी आयु लगभग निर्मला के पिता जितनी ही थी। तोताराम के प्रति निर्मला की भावनाओं को व्यक्त करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं कि, "अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी; अब उनकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं, सम्मान की वस्तु समझती थी। उससे भागती फिरती, उसको देखते ही उसकी प्रफुल्लता पलायन कर जाती थी।"[1] अधेड़ उम्र के व्यक्ति को पति के रूप में स्वीकारने के लिए उसे कितना मानसिक संघर्ष करना पड़ता है इसका चित्रण हमें मिलता है। इसके साथ ही साथ भारतीय नारी की संस्कृति को दर्शाते हैं कि भारतीय नारी का विवाह किसी भी व्यक्ति से किसी भी परिस्थितियों में क्यों न हो, परंतु उस रिश्ते को वह अपने अंतिम क्षणों तक निभाती है। अपने परिवार को बाँधकर रखने का पूरा प्रयास करती है। जैसे सीमोन द बोउवार 'स्त्री उपेक्षिता' में लिखती हैं कि 'स्त्री के ऊपर सब से बड़ा बोझ आज विवाह का है।'[2] परंतु निर्मला अपने परिवार को बोझ न मानकर परिवारवालों की भावनाओं के साथ समझौता कर परिस्थिति के अनुसार व्यवहार तो करती है, पर

वास्तविकता यह थी कि निर्मला के लिए यह विवाह एक बोझ ही था और वह उसे मजबूरन ढो रही थी।

इसी मजबूरी के कारण निर्मला के लिए पत्नी धर्म का परिपालन करना अनिवार्य था। क्योंकि वह भारतीय नारी है और भारतीय नारी के लिए पति, परमेश्वर होता है। तोताराम जैसे अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ जीवनयापन करना निर्मला की विवशता थी। अपनी विवशता को व्यक्त करते हुए बहिन कृष्णा से कहती है- "कृष्णा, मैं सौगंध खाकर कहती हूँ, जो मेरे मन में उनकी ओर से जरा भी मैल हो। मुझसे जहाँ तक हो सकता है, उनकी सेवा करती हूँ; अगर उनकी जगह कोई देवता भी होता तो भी मैं इससे ज्यादा और कुछ न कर सकती। उन्हें भी मुझसे प्रेम है। बराबर मेरा मुँह देखते रहते हैं; लेकिन जो बात उनके और मेरे काबू के बाहर है, उसके लिए वह क्या कर सकते हैं और मैं क्या कर सकती हूँ। न वह जवान हो सकते हैं, न मैं बुढ़िया हो सकती हूँ।"[3] भाग्य के सामने विवश होकर निर्मला को समझौते का जीवन यापन करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यह विवाह निर्मला को अपेक्षाकृत सुख नहीं दे रहा है।

निर्मला भारतीय मध्यमवर्ग की नारी होने के कारण अंतर्मन से न सही लेकिन पत्नी धर्म का कर्तव्य अवश्य निभाती है। अब वह केवल वस्तु बनकर रह गयी है। विवाह के बाद तोताराम निर्मला पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त करना चाहता है परंतु यह विचार निर्मला के लिए असह्य था। इन विचारों से उसे मानसिक उत्पीड़न होने लगी थी। कर्तव्यविमूढ़ता पर संताप व्यक्त करती हुई कहती है कि, "अब तक नैराश्य के संताप में उसने कर्तव्य पर ध्यान नहीं दिया था। उसके हृदय में विप्लव की ज्वाला-सी दहकती रहती थी, जिसकी असह्य वेदना ने उसे संज्ञाहीन-सा कर रखा था। अब उस वेदना का वेग शांत होने लगा। उसे ज्ञात हुआ कि मेरे लिए जीवन का कोई आनंद नहीं। उसका स्वप्न देखकर क्यों इस जीवन को नष्ट करूँ। संसार में सबके सब प्राणी सुख-सेज ही पर तो नहीं सोते? मैं भी उन्हीं अभागिनों में हूँ।"[4]

अनमने मन से ही सही वह पत्नी धर्म निभाने के लिए पूर्ण रूप से अपने आपको तैयार कर लेती है और यह भारतीय नारी की खासियत है।

भारतीय नारी में मातृवात्सल्य तथा मातृप्रेम की कोई कमी नहीं है। निर्मला का विवाह ऐसे व्यक्ति से हुआ है, जिसके पहले से ही तीन बच्चे हैं। बाल्यावस्था में विवाह होने के कारण निर्मला में अभी भी बालवृत्तियाँ वैसी की वैसी थीं। परंतु संदर्भ आने पर मातृ-वात्सल्य को व्यक्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ती। वह तोताराम के बेटों के प्रति मातृ-स्नेह रखती है, तो तोताराम, मंसाराम-निर्मला के स्नेह को संदेह की दृष्टि से देखने लगता है। एक माँ के लिए इससे बड़ा आरोप क्या हो सकता है। स्नेह वात्सल्य और विनय की देवी निर्मला, तोताराम के द्वारा हो रहे मानसिक हिंसा को झेल रही है। क्योंकि वह भारतीय नारी है। भारतीय नारी को बचपन से ही परिस्थिति से समझौता करना सिखाया गया है। मंसाराम, जियाराम और सियाराम के लिए निर्मला विमाता होते हुए भी मातृ-स्नेह में कोई कमी नहीं थी। उसकी ममता, उसके स्नेहमय व्यवहार ने मंसाराम के सुकोमल हृदय पर ऐसी छाप छोड़ दी थी कि वह अपनी अंतिम साँसें लेते हुए कहता है- "मैं आपका स्नेह कभी न भूलूँगा। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा पुनर्जन्म आपके गर्भ से हो, जिससे मैं आपके ऋण से उत्तीर्ण हो सकूँ। ईश्वर जानता है, मैंने आपको विमाता नहीं समझा। मैं आपको अपनी माता समझता रहा।"[5] यह निर्मला का नि:स्वार्थ स्नेह ही था, जो मंसाराम के माध्यम से बोला जा रहा था। यहाँ निर्मला का चित्रण जननी से बढ़कर किया गया है। वह सहृदयता और स्नेह की देवी थी। वह सराहनीय थी। वह तोताराम के बच्चों के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करती। वह कहती है कि, "अगर उसके रक्त से मंसाराम के प्राण बच जायें, तो वह बड़ी खुशी से उसकी अंतिम बूँद तक दे डालेगी।"[6] इसी मातृ-स्नेह के कारण जियाराम के द्वारा उसके आभूषणों की चोरी करने के बावजूद जियाराम को चोरी के आरोप से मुक्त करना चाहती है। पिता-पुत्र के संबंधों में बाधा उत्पन्न करना नहीं चाहती है। वह अपने

परिवार की मर्यादा की रक्षा करती है। यहाँ लेखक ने माँ-पुत्र के स्नेह के आदर्श रूप का चित्रण किया है।

अंततः केवल इतना ही कह सकते हैं कि संपूर्ण उपन्यास में भारतीय नारी की वेदना, संवेदना, परिवार के प्रति सजगता, बच्चों के प्रति मातृप्रेम, पत्नीधर्मिता आदि का चित्रण किया गया है। निर्मला एक भारतीय मध्यवर्गीय परिवार की नारी है, जो आदर्श तथा भारतीय संस्कृति की खान है। वह एक आदर्श पत्नी, गृहिणी तथा माँ रही है। वह सहृदयी, स्नेह-जीवी, पारिवारिक गुणों से भरपूर एक आदर्श नारी है। वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी संयम और समझदारी से अपने विचारों की अभिव्यक्ति बहुत ही सादगी से करती है। 'निर्मला' के माध्यम से प्रेमचंद जी ने भारतीय नारी की झाँकी प्रस्तुत की है।

## संदर्भ सूची


1. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. सं-11
2. स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, पृ. सं- 71
3. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. सं-75
4. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. सं-32
5. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. सं-66
6. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. सं-64



**सह प्राध्यपिका,** हिन्दी विभाग
बी. एल. डी. ई. संस्था
एस.बी. कला और के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय,
विजयपुर, कर्नाटक


❖❋❖